अज़ीजुन निसा: '1857 का विद्रोह और स्त्री चिंतन'

बरखा
शोधार्थी
दिल्ली विश्वविद्यालय

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के नाम से विख्यात 1857 की क्रांति भारतीय इतिहास में अपना विशेष दर्जा रखती है। अपनी 2 वर्षों की गुलामी के दौरान भारतवासियों ने आजादी हेतु कई लड़ाइयां लड़ी जिनका श्रीगणेश सन् 1857 की क्रांति से हुआ। देश का यह प्रथम स्वाधीनता संग्राम अपनी असफलता के बावजूद महत्वपूर्ण है। चूंकि इस संग्राम में पहली बार हिन्दुस्तानी आवाम ने एकजुट होकर ईस्ट इंडिया कंपनी का विरोध किया। 1947 में मिली आजादी की जड़े इसी संग्राम में निहित थी।

1857 की क्रांति शोषण, उत्पीड़न, दमन के विरूद्ध भारतीय अवाम के प्रतिरोध की महत्वपूर्ण कड़ी है। यह एक खूनी सशस्त्र क्रांति थी क्योंकि तब तक गांधी का अहिंसावाद राजनीति में प्रवेश नहीं कर पाया था। त्रिपुरारी शर्मा के अनुसार- 'ये काले और गोरों के बीच की कशमकश है जो फैसले के लम्हे को छूने जा रही है। एक काली चमड़ी के जख्म का मुआवज़ा है एक गोरी जिंदगी, उससे कम नहीं।''

देशी राज्यों का विलय, अंग्रेजों द्वारा भारतीय धर्म और संस्कृति में हस्तक्षेप, चर्बी वाले कारतूस इत्यादि इस विद्रोह के प्रमुख कारण थे। विद्रोह में भाग लेने वाले अधिकांश व्यक्ति सैनिक थे। चर्बी वाले कारतूसों के कारण वे त्रस्त थे उनका ज़मीर तक बिक गया था और धर्म भी छिन गया था, एक ऊब, एक टीस, एक घृणा उनके भीतर थी जो उनकी नस-नस में ज़हर की भांति फैल रही थी। ये ऊब शम्सुद्दीन के इस वक्तव्य में स्पष्ट नजर आती है। ''शम्सुद्दीनः पर वाह रे अंग्रेज मालिक तुझे जान दी, लहू दिया, जज़्बात भी दिये...। एक खुदा ही तो मेरा था। उसी से हर मुश्किल बरदाश्त करने की ताकत मिली थी पर अब वह राहत कहां? रूह से आँख मिलना मुहाल है।''[2]

किन्तु इस क्रांति में मुख्य तौर पर प्रतिरोध का स्वर ही उभरकर सामने आता है। यह क्रांति सैनिकों का विद्रोह मात्र नहीं थी अपितु यह उत्पीड़ित, शोषित व प्रताड़ित भारतीय जनमानस की एक व्यापक राष्ट्रीय क्रांति थी। इस क्रांति का प्रमुख केन्द्र मेरठ, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, बरेली, बनारस, झांसी, ग्वालियर तथा बिहार रहा। 1857 की क्रांति के बाद भारत में एक महान परिवर्तन, एक युगांतर आया और यह युगांतर भारतीय स्वतंत्रता की नींव बना, साथ ही भारतीय साहित्य में भी इसकी प्रतिध्वनि सुनाई दी।

इस विद्रोह में एक बड़ा हिस्सा सैनिकों का भले ही रहा हो किन्तु इसे सैनिक विद्रोह